जो मिटा है तेरे जमाल पर

- फ़ना बुलन्दशहरी

जो मिटा है तेरे जमाल पर, वो हर एक ग़म से गुज़र गया
हुई जिस पे तेरी नवाज़िशें, वो बहार बन के संवर गया ||

तेरी मस्त आँख ने ऐ सनम, मुझे क्या नज़र से पिला दिया
के शराबख़ाने उजड़ गये, जो नशा चढ़ा था उतर गया ||

तेरा इश्क़ है मेरी ज़िन्दगी, तेरे हुस्न पे मैं निसार हूँ
तेरा रंग आँख में बस गया, तेरा नूर दिल में उतर गया ||

की ख़िरद की फ़ितनागरी, लुटे होश छागई बेखुदी
वो निग़ाह-ए-मस्त जहाँ उठी, मेरा जाम-ए-ज़िन्दगी भर गया ||

दर-ए-यार तू भी अजीब है, है अजीब तेरा ख़याल भी
रही ख़म जबीन-ए-नियाज़ भी, मुझे बेनियाज़ भी कर गया ||

तेरे दीद से ऐ मेरे सनम, चमन आरज़ूओं का महक उठा
तेरे हुस्न की जो हवा चली, तो जुनूं का रंग निखर गया ||

मुझे सब ख़बर है मेरे सनम, के राह-ए-'फ़ना' में हयात है
उसे मिलगयी नयी ज़िन्दगी, तेरे आस्तां पे जो मर गया ||